सायंकालकृत्यप्रकरणम्

इदानीन्तु सन्ध्यासमय आगतः सायंसन्ध्यामुपास्य भोजनं कृत्वा भ्रमणं कुरुत ।	अब तो सन्ध्या समय आया, सन्ध्योपासन और भोजन करके घूमना घामना करो ।
अद्य त्वया कियत् कार्यं कृतम् ?	आज तूने कितना काम किया ?
एतावत्कृतमेतावदवशिष्टमस्ति ।	इतना किया और इतना शेष है ।
अद्य कियांल्लाभो व्ययश्च जातः ?	आज कितना लाभ और खर्च हुआ ?
पञ्चशतानि मुद्रा लाभः सार्द्धद्वे शते व्ययश्च ।	पांच सौ रुपये लाभ और अढ़ाई सौ खर्च हुए ।
इदानीं सामगानं क्रियताम् ।	इस समय सामवेद का गान कीजिये ।
वीणादीनि वादित्राण्यानीयताम् ।	वीणादिक बाजे लाइये ।
आनीतानि ।	लाये ।
वाद्यताम् ।	बजाइये ।
गीयताम् ।	गाइये ।
कस्य रागस्य समयो वर्त्तते ?	किस राग की वेला है ?
षड्जस्य ।	षड्ज की ।
इदानीं तु दशघटिकाप्रमिता-रात्र्यागता शयीध्वम् ।	इस समय तो दश घड़ी रात आई, सोइये ।
गम्यतां स्वस्वस्थानम् ।	जाइये अपने अपने घर को ।
स्वस्वशय्यायां शयनं कर्त्तव्यम् ।	अपने अपने पलंग पर सोना चाहिये ।
सत्यमेवमेवेश्वरकृपया सुखेन रात्रिर्गच्छेत्प्रभातं भवेत् ।	सत्य है, ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुखपूर्वक रात बीते और सवेरा होवे ।

शरीराऽवयवप्रकरणम्

अस्य शिरः स्थूलं वर्त्तते ।	इसका शिर बड़ा है ।

देवदत्तस्य मूर्द्धकेशाः कृष्णा वर्त्तन्ते ।	देवदत्त के शिर में बाल काले हैं ।
मम तु खलु श्वेता जाताः ।	मेरे तो सुपेद हो गये ।
तवापि केशा अर्द्धश्वेताः सन्ति ।	तेरे भी बाल आधे सुपेद हैं ।
अस्य ललाटं सुन्दरमस्ति ।	इसका माथा सुन्दर है ।
अयं शिरसा खल्वाटः ।	इसके शिर में बाल नहीं हैं ।
तस्योत्तमे भ्रुवौ स्तः ।	उसकी अच्छी भौंहें हैं ।
श्रोत्रेण शृणोषि न वा ?	कान से सुनता है वा नहीं ?
शृणोमि ।	सुनता हूँ ।
अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्याभूषणानि धृतानि ।	इस स्त्री ने कानों में अच्छे सुन्दर गहने पहिने हैं ।
किमयं कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति ?	क्या यह कानों से बहिरा है ?
बधिरस्तु न परन्तु श्रवणे ध्यानं न ददाति ।	बहिरा तो नहीं परन्तु सुनने में ध्यान नहीं देता ।
अयं विशालाक्षः ।	यह अच्छे नेत्रवाला है ।
त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा ?	तू आंख से देखता है वा नहीं ?
पश्यामि परन्त्विदानीं मन्ददृष्टि र्जातोहमस्मि ।	देखता हूं, परन्तु इस समय मन्ददृष्टि अर्थात् थोड़ी दृष्टिवाला हो गया हूँ ।
इदानीन्ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्त्तेते ?	इस समय तेरी आँखें लाल क्यों हैं ?
यतोऽहं शयनादुत्थितः ।	मैं सोके उठा हूं जिससे ।
स काणो धूर्तोऽस्ति ।	वह काना धूर्त्त है ।
द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत् कथं गच्छति ?	देखो, यह अन्धा आँखवाले के समान कैसे जाता है ?
तवाऽक्षिणी कदा नष्टे ?	तेरी आँखें कब नष्ट हुईं ?
यदाऽहं पञ्चवर्षोऽभूवम् ।	जब मैं पांच वर्ष का हुआ था ।

इदानीम्मन्नेत्रे रोगोऽस्ति स कथं निवर्त्स्यति ?	इस समय मेरे नेत्र में रोग है, वह कैसे निवृत्त होगा ?
अञ्जनाद्यौषधसेवननेन निवर्त्तिष्यते।	अञ्जन आदि औषध के सेवन से निवृत्त होगा ।
तस्य नासिकोत्तमास्ति ।	उसकी नाक अति सुन्दर है ।
भवानपि शुकनासिकः ।	आप भी सुग्गे के सी नाकवाले हैं ।
घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा ?	नाक से गन्ध सूंघते हो वा नहीं ?
श्लेष्मकफत्वान्मया नासिकया गन्धो न प्रतीयते ।	सरदी कफ (जुकाम) होने से मुझको नासिका से गन्ध की प्रतीति नहीं होती ।
अयं पुरुषः सुकपोलोऽस्ति ।	यह पुरुष अच्छे गालवाला है ।
अतिस्थूलत्वादस्य नाभिर्गम्भीरा ।	बहुत मोटा होने से इसकी नाभि गहरी है ।
त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यसे किमत्र कारणम् ?	तू आज प्रसन्नमुख दिखाई देता है। इसमें क्या कारण है ?
अयं सदाऽऽह्लादितवदनो विद्यते ।	यह सब दिन प्रसन्नमुख बना रहता है।
अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तेते ।	इसके ओष्ठ बहुत अच्छे हैं ।
अयँल्लम्बोष्ठत्वाद्भयङ्करोस्ति ।	यह लम्बे ओष्ठवाला होने से भयङ्कर है ।
सर्वैर्जिह्वया स्वादो गृह्यते ।	सब लोग जीभ से स्वाद लिया करते हैं ।
वाचा सत्यं प्रियं मधुरं सदैव वाच्यम् ।	वाणी से सत्य, प्रिय और मधुर सब दिन बोलना चाहिये ।
नैव केनचित्खल्वनृतादिकं वक्तव्यम् ।	कभी किसी को झूठ नहीं बोलना चाहिये ।

अयं सुदन् वर्त्तते ।	यह अच्छे दांतोंवाला है ।
तव दन्ता दृढाः सन्ति चलिता वा ?	तेरे दांत दृढ़ हैं वा हिल गये हैं ?
मम दृढा अस्य तु त्रुटिताः सन्ति ।	मेरे दृढ़ हैं अर्थात् निश्चल हैं और इस के तो टूट गये हैं ।
मन्मुख एकोऽपि दन्तो नास्त्यतः कष्टेन भोजनादिकं करोमि ।	मेरे मुख में एक भी दांत नहीं है इससे क्लेश से भोजन करता हूँ ।
अस्य श्मश्रूणि लम्बीभूतानि सन्ति ।	इसकी मूंछें लम्बी हैं ।
अस्य हनुर्महान् वर्त्तते ।	इसकी ठोड़ी बड़ी है ।
तव चिबुकस्योपरि केशा न्यूनाः सन्ति ।	तेरी ठोड़ी के ऊपर बाल थोड़े हैं ।
त्वया कण्ठ इदं किमर्थं बद्धम् ?	तूने गले में यह किसलिये बांधा है ?
अस्योरू विस्तीर्णौ स्तः ।	इसकी जांघ अच्छी तैयार हैं ।
त्वया हृदये किं लिप्तम् ?	तूने छाती में क्या लगाया है ?
इदानीं हेमन्तोऽस्त्यतः कुङ्कुमकस्तूर्यौ लिप्ते ।	इस समय हेमन्त ऋतु है, इससे केसर और कस्तूरी लेपन किये हैं ।
तथा हृच्छूलनिवारणायौषधम् ।	वैसे ही हृदयशूल निवारण के लिये औषध ।
माणवकः स्तनाद् दुग्धं पिबति	लड़का स्तन से दूध पीता है ।
पश्य ! देवदत्तोऽयं लम्बोदरो वर्तते ।	देख ! देवदत्त यह बड़े पेटवाला अर्थात् तुन्दीला है ।
अयन्तु खलु क्षामोदरः ।	यह तो छोटे पेटवाला है ।
तव पृष्ठे किं लग्नमस्ति ?	तेरी पीठ में क्या लगा है ?
किं स्कन्धाभ्यां भारं वहसि ?	क्या तू कन्धों से भार उठाता है ?
पश्याऽस्य क्षत्रियस्य बाह्वोर्बलं येन स्वभुजबलप्रतापेन राज्यं वर्द्धितम् ।	देख ! इस क्षत्रिय का बाहुबल, जिसने अपने बाहुबल के प्रताप से राज्य बढ़ाया है ।

मनुष्येण हस्ताभ्यामुत्तमानि धर्मकार्याणि सेव्यानि नैव कदाचिदधर्म्याणि ।	मनुष्य को चाहिये कि हाथों से उत्तम धर्मयुक्त कर्म करे, न कभी अधर्मयुक्त कर्मों को ।
अस्य करपृष्ठे करतले च घृतं लग्नमस्ति ।	इसके हाथ की पीठ और तले में घी लगा है ।
मुष्टिबन्धने सत्येकत्राऽङ्गुष्ठ एकत्र चतस्रोऽङ्गुलयो भवन्ति ।	मूंठी बांधने में एक ओर अंगूठा और एक ओर चार अंगुली होती हैं ।
शरीरस्य मध्यभागे नाभिः पुरतः पश्चिमतः कटिः कथ्यते ।	शरीर के आगे [के] बीच भाग को नाभि और पीछे के भाग को पीठ कहते हैं ।
अयं मल्लः स्थूलोरुः ।	यह पहलवान मोटी जंघावाला है ।
माणवको जानुभ्यां गच्छति ।	लड़का घुटनों के बल से चलता है ।
अद्यातिगमनेन जङ्घे पीडिते स्तः ।	आज बहुत चलने से जांघें दूखती हैं ।
अहं पद्भ्यां ह्यो ग्राममगमम् ।	मैं पैदल कल गांव को गया था ।
अस्य शरीरे दीर्घाणि लोमानि सन्ति ।	इसके शरीर में बड़े बड़े रोम हैं ।
तव शरीरे च न्यूनानि सन्ति ।	और तेरे शरीर में थोड़े रोम हैं ।
अस्य शरीरचर्म श्लक्ष्णं वर्त्तते ।	इसके शरीर का चमड़ा चिकना है ।
पश्यास्य नखा आरक्ताः सन्ति ।	देख, इसके नख कुछ कुछ लाल हैं ।
अयं दक्षिणेन हस्तेन भोजनं वामेन जलं पिबति ।	यह दाहिने हाथ से भोजन और बायें से जल पीता है ।
इदानीं त्वया श्रमः कृतोऽस्त्यतो धमनी शीघ्रं चलति ।	इस समय तूने श्रम किया है, इससे नाड़ी शीघ्र चलती है ।
अधुना तु ममान्तस्त्वग् दह्यतेऽस्थिषु पीडापि वर्त्तते ।	इस समय मेरे भीतर की त्वचा जलती और हाड़ों में पीड़ा भी है ।

राजसभाप्रकरणम्

तिष्ठ भो देवदत्त ! त्वया सह गच्छामि राजसभाम् ।	ठहर देवदत्त ! तेरे साथ मैं भी राजसभा को चलता हूँ ।
सभाशब्दस्य कः पदार्थः ?	सभा शब्द का क्या अर्थ है ?
या सत्यासत्यनिर्णयाय प्रकाशयुक्ता वर्त्तते ।	जो सच-झूठ का निर्णय करने के लिये प्रकाश से सहित हो ।
तत्र कति सभासदः सन्ति ?	वहां कितने सभासद् हैं ?
सहस्रम् ।	हजार ।
या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्चशतानि सभासदः सन्ति ।	जो मेरे ग्राम में सभा है उसमें तो पांच सौ सभासद् हैं ।
इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि विचारः कर्त्तव्यः ?	इस समय सभा में किस विषय पर विचार करना चाहिये ?
युद्धस्य ।	युद्ध अर्थात् लड़ाई का ।
तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा ?	उसके साथ युद्ध करना चाहिये वा नहीं ?
यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम् ?	यदि करना चाहिए तो कैसे ?
यदि स धर्मात्मा तदा तु न कर्त्तव्यम् ।	यदि वह धर्मात्मा हो तब तो युद्ध करना योग्य नहीं ।
पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव ।	और जो पापी हो तो उसके साथ युद्ध करना ही चाहिये ।
सोऽन्यायेन प्रजां भृशं पीडयत्यतो महापापिष्ठः ।	वह अन्याय से प्रजा को निरन्तर पीड़ा देता है, इस कारण से बड़ा पापी है ।
एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्रप्रक्षेपयुद्धकुशला-बलिष्ठा कोशधान्यादिसामग्रीसहिता सेना युद्धाय प्रेषणीया ।	यदि ऐसा है तो शस्त्र-अस्त्र चलाने में और युद्ध में कुशल, बड़ी लड़नेवाली, खजाना और अन्नादि सामग्री सहित सेना युद्ध के लिये भेजनी चाहिये ।

सत्यमेवात्र वयं सर्वे सम्मतिं दद्मः।	सच ही है, इसमें हम सब लोग सम्मति देते हैं।
इदानीं कस्यां दिशि कैः सह युद्धं प्रवर्त्तते ?	इस समय किस दिशा में कौन कौन के साथ युद्ध होता है।
पश्चिमायां दिशि यवनैः सह हरिवर्षस्थानाम्।	पश्चिम दिशा में मुसलमानों के साथ हरिवर्षस्थ अर्थात् यूरोपियन लोगों का।
पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न त्यजन्ति।	हारे हुए मुसलमान लोग अब भी उपद्रव नहीं छोड़ते।
अयं खलु पशुपक्षिणामपि स्वभावोऽस्ति यदा कश्चित्तद्गृहादिकं गृहीतुमिच्छेत् तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव।	यह तो पशु-पक्षियों का भी स्वभाव है कि जब कोई उनके घर आदि को छीन लेने की इच्छा करता है तब यथाशक्ति युद्ध करते अर्थात् लड़ते ही हैं।

ग्राम्यपशुप्रकरणम्

भो गोपाल ! गा वने चारय।	हे अहीर ! गौओं को वन में चरा।
तत्र या धेनवस्ताभ्योऽर्द्धं दुग्धं त्वया दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयमर्द्धं च वत्सेभ्यः पाययितव्यम्।	वहाँ जो नई व्यानी गौयें उनसे आधा दूध तूने दुहकर मालिक को देना और आधा बछड़ों को पिलाना चाहिये।
एतौ वृषभौ रथे योक्तुं योग्यौ स्तः।	ये दोनों बैल गाड़ी में वा रथ में जोतने के योग्य हैं।
इमौ हले खलु।	और ये दोनों हल ही में।
पश्येमाः स्थूला महिष्यो वने चरन्ति।	देखिये, ये मोटी भैंसें वन में चरती हैं।
आगच्छ भो ! द्रष्टव्यम्महिषाणां युद्धं परस्परं कीदृशं भवति।	आओ जी ! देखो भैंसों का युद्ध किस प्रकार आपस में हो रहा है।

अस्य राज्ञो बहवः उत्तमा अश्वाः सन्ति ।	इस राजा के बहुत से उत्तम घोड़े हैं ।
किमियं राज्ञः सतुरङ्गा सेना गच्छति ?	क्या यह राजा की घोड़ों सहित सेना जा रही है ?
श्रोतव्यं हरयः कीदृशं ह्रेषन्ते ।	सुनिये, घोड़े किस प्रकार हिनहिनाते हैं ।
यथा हस्तिनो स्थूलाः सन्ति तथा हस्तिन्योऽपि ।	जैसे हाथी मोटे होते हैं वैसे हथिनी भी ।
नागास्समं गच्छन्ति ।	हाथी बराबर चाल से चलते हैं ।
श्रृणु, करिणः कीदृशं बृंहन्ति ।	सुन, हाथी कैसे चिंघारते हैं ।
पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति ।	देख, ये हाथी पर बैठ के जाते हैं ।
अस्य राज्ञः कतीभास्सन्ति ?	इस राजा के कितने हाथी हैं ?
पञ्च सहस्राणि ।	पांच हजार ।
रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति ।	रात में कुत्ते भूंसते हैं ।
प्रातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति ।	सवेरे मुरगे बोलते हैं ।
मार्जारो मूषकानत्ति ।	बिल्ला मूसों को खाता है ।
कुलालस्य गर्द्दभा अतिस्थूलाः सन्ति ।	कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं ।
श्रृणु, लम्बकर्णा रासभा रासन्ते ।	सुन, लम्बे कानों वाले गदहे रेंकते हैं ।
ग्राम्यशूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं शुन्धन्ति ।	गांव के सूवर मैला खाके भूमि को शुद्ध करते हैं ।
उष्ट्रा भारं वहन्ति ।	ऊंट बोझ ढोते हैं ।
अजाविपालोऽजा अवीर्दोग्धि ।	गड़रिया बकरी और भेड़ों को दुहता है ।

पशवोऽपुर्नद्यां जलम् ।	पशुओं ने नदी में जल पिया था ।
रक्तमुखो वानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्णमुखस्तु श्रेष्ठः खलु ।	लाल मुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और और काले मुंह का लंगूर तो अच्छा होता है ।
वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति ।	बन्दरी मरे हुए बच्चे को भी नहीं छोड़ती ।
गोपालेन गावो दुग्धाः पयो न वा ?	ग्वाले ने गौओं से दूध दुहा वा नहीं ?
कपिलाया गोर्मधुरं पयो भवति ।	कपिला (पीली) गाय का दूध मीठा होता है ।
अयं वृषभः कियता मूल्येन क्रीतः ।	यह बैल कितने मोल से खरीदा है ?
शतेन रूप्यैः ।	सौ रुपयों से ।
कतिभिः पणैः प्रस्थं पयो मिलति ?	कितने पैसे सेर दूध मिलता है ?
द्वाभ्यां पणाभ्याम् ।	दो पैसों से ।
पश्य देवदत्त ! वानराः कथमुत्प्लवन्ते ?	देख, देवदत्त ! बन्दर कैसे कूदते हैं ?
अयं महाहनुत्वाद्धनुमान्वर्त्तते ।	यह बन्दर बड़ी ठोड़ीवाला होने से हनुमान् है ।

ग्रामस्थपक्षिप्रकरणम्

एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीडं रचितम् ।	इन चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया है ।
अत्राण्डानि धृतानि ।	यहां अण्डे धरे हैं ।
इदानीं तु चाटकैरा अपि जाताः ।	अब तो इनके बच्चे भी हो गये हैं ।
पश्य, विष्णुमित्र ! कुक्कुटयोर्युद्धम् ।	देख, विष्णुमित्र ! मुरगों की लड़ाई ।

कुक्कुटी स्वान्यण्डानि सेवते ।	मुरगी अपने अण्डों को सेवती है ।
पश्य, शुकानां समूहं यो विरुवन्नुड्डीयते ।	देख, सुग्गों के झुण्ड को जो चचेंता हुआ उड़ रहा है ।
रात्रौ काका न वाश्यन्ते ।	रात में कौवे नहीं बोलते हैं ।
अरे भृत्योड्डायय ध्वांक्षमनेन पातव्यजलपात्रे चञ्चुं निक्षिप्य जलं विनाशितम् ।	अरे नौकर ; कौवे को उड़ादे, इसने पीने के जल के बरतन में चोंच डाल कर जल दूषित कर दिया ।
वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता ।	कौवे ने लड़के के हाथ से रोटी लेली ।
पश्य, कीदृशं काकोलूकिकं युद्धं प्रवर्त्तते ।	देख, किस प्रकार की कौवे और उल्लुओं की लड़ाई हो रही है ।
अनेन शुकहंसतित्तिरिकपोताः पालिताः ।	इसने सुग्गा, हंस, तीतर और कबूतर पाले हैं ।

वन्यपशुप्रकरणम्

वने रात्रौ सिंहा गर्जन्ति ।	वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं ।
शार्दूलं दृष्ट्वा सिंहा निलीयन्ते ।	शार्दूल को देखकर सिंह छिप जाते हैं ।
ह्यः सिंहो गामहन् ।	कल सिंह ने गौ को मार डाला ।
परश्वो विक्रमवर्मणा सिंहो हतः ।	परसों विक्रमवर्मा क्षत्रिय ने सिंह मारा ।
द्रष्टव्यं हस्तिसिंहरणम् ।	देख, हाथी और सिंह की लड़ाई ।
जङ्गले हस्तियूथाः परिभ्रमन्ति ।	जंगल में हाथियों के झुण्ड घूमते हैं ।
इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः ।	अभी भेड़िये ने हिरन पकड़ लिया ।
अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहाप्याजिः कृता ।	यह कुत्ता बड़ा बलवान् है, इसने सिंह के साथ लड़ाई की ।
पश्य, सिंहवराहसंग्रामम् ।	देख, सिंह और शूकर का युद्ध ।

शूकरा इक्षुक्षेत्राणि भक्षयित्वा विनाशयन्ति ।	शूकर ऊख के खेतों को खाकर नष्ट कर देते हैं ।
पश्य, वेगेन धावतो मृगान् ।	देख, वेग से दौड़ते हुए हिरनों को ।
अयं रुरुर्वृषभवत्स्थूलोऽस्ति ।	यह काला रोज बैल के समान मोटा है ।
यो निलयादुत्प्लुत्य धावति स शशस्त्वया दृष्टो न वा ?	जो भांटी से कूदता हुआ दौड़ता है उस खरहा को तूने देखा है वा नहीं ?
बहून् दृष्टवान् ।	बहुतों को देखा है ।
कदाचिद्भल्लूकोऽपि दृष्टो न वा ।	कभी रीछ भी देखे हैं वा नहीं ?
एकदा ऋच्छेन साकं मम युद्धं जातम् ।	एक समय रीछ के साथ मेरी लड़ाई हुई थी ।
रात्रौ शृगालाः क्रोशन्ति ।	रात्रि में सियार रोते हैं ।
कदाचित्खड्गोऽपि दृष्टो न वा ?	कभी गैंडा भी देखा था नहीं ?
य आरण्या महिषा बलवन्तो भवन्ति तान्कदाचिद् दृष्टवान्न वा ?	जो अरणे भैंसे बलवान् होते हैं उनको कभी देखा वा नहीं ?

वनस्थपक्षिप्रकरणम्

कदाचित् सारसावप्युड्डीयमानौ क्रीडन्तौ महाशब्दं कुरुतः ।	कभी सारस पक्षी भी उड़ने और क्रीड़ा करते हुए बड़े शब्द करते हैं ।
श्येनेनातिवेगेन वर्त्तिका हता ।	बाज ने बड़े वेग से बटेर मारी ।
शृणु, तित्तिरयः कीदृशं मधुरं नदन्ति !	सुन, तित्तिर किस प्रकार मधुर बोलते हैं ?
वसन्ते पिकाः प्रियं कूजन्ति ।	वसन्त ऋतु में कोयल प्रिय शब्द करती है ।

काककोकिलवद् दुर्वचाः सुवाक् च मनुष्यो भवति ।	कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलनेवाला मनुष्य होता है ।
अयं देवदत्तो हंसगत्या गच्छति ।	यह देवदत्त हंस के समान चलता है ।
पश्येमे मयूरा नृत्यन्ति ।	देख, ये मोर नाचते हैं ।
उलूका रात्रौ विचरन्ति ।	उल्लू रात को विचरते हैं ।
पश्य, बकः सरस्सु पाखण्डिजनवन्मत्स्यान् हन्तुं कथं ध्यायति ?	देख, बगुला तालाबों में पाखण्डी मनुष्य के तुल्य मछली मारने को किस प्रकार ध्यान कर रहा है ?
बलाका अप्येवमेव जलजन्तून् घ्नन्ति ।	बलाका भी इसी प्रकार जलजन्तुओं को मारती हैं ।
पश्य, कथञ्चकोरा धावन्ति ?	देख, किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं ?
येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृध्रास्त्वया दृष्टा न वा ?	जो बहुत ऊपर आकाश में जाकर मांस के लिये गिरते हैं वे गीध तूने देखे हैं वा नहीं ?
मैनका मनुष्यवद्वदन्ति ।	मैना मनुष्य के समान बोलती हैं ।
चिल्लिका माणवकहस्ताद्रोटिकां छित्वोड्डीयते ।	चील्ह लड़के के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जाती है ।

तिर्यग्जन्तुप्रकरणम्

सर्पाः शीघ्रं सर्पन्ति ।	सर्प जल्दी सरकते हैं ।
अयं कृष्णः फणी महाविषधारी ।	यह काला सांप बड़ा विषवाला है ।
भवता कदाचिदजगरोऽपि दृष्टो न वा ?	आपने कभी अजगर भी देखा है वा नहीं ?
पश्याहिनकुलस्य संग्रामो वर्त्तते ।	देख, सांप और नेउले का युद्ध हो रहा है ।
स वृश्चिकेन दष्टो रोदिति ।	वह बिच्छू से काटा हुआ रोता है ।
इयं गोधा स्थूलास्ति ।	यह गोह मोटी है ।

मूषका बिले शेरते ।	मूसे बिल में सोते हैं ।
मक्षिकां भक्षयित्वा वमनं प्रजायते ।	मक्खी खाकर वमन हो जाता है ।
अत्र वासः कर्त्तव्यो निर्मक्षिकं वर्त्तते ।	यहां वास करना चाहिये, मक्खी एक भी नहीं है ।
मधुमक्षिकादशनेन शोथः प्रजायते ।	मधुमक्खियों के काटने से सूजन हो जाती है ।
भ्रमरा गुञ्जन्तः पुष्पेभ्यो गन्धं गृह्णन्ति ।	भौंरे गूंजते हुए, फूलों से सुगन्धि ग्रहण करते हैं ।

जलजन्तुप्रकरणम्

तिमिङ्गला मत्स्याः समुद्रे भवन्ति ।	तिमिङ्गिल मछलियाँ समुद्र में होती हैं ।
रोहित् सिंहतुण्डाराजीवाश्च कुण्ड पुष्करिणीनदीतडागसमुद्रेषु निवसन्ति ।	रोहू, सिंहतुण्ड और राजीव इन नामों की मछलियाँ कुण्ड, बावली, नदी, तालाब और समुद्र में वास करती हैं ।
मकरः पशूनपि गृहीत्वा निगलति ।	मगर पशुओं को भी पकड़ कर निगल जाता है ।
नक्रा ग्राहा अपि महान्तो भवन्ति ।	नाके घरियार भी बड़े बड़े होते हैं ।
कूर्म्माः स्वाङ्गानि संकोच्य प्रसारयन्ति ।	कछुए अपने अङ्गों को समेट कर फैलाते हैं ।
वर्षासु मण्डूकाः शब्दयन्ति ।	वर्षा में मेंढक बोलते हैं ।
जलमनुष्या अप्सु निमज्य तट आसते ।	जल के मनुष्य पानी में डूबकर तीर पर बैठते हैं ।

वृक्षवनस्पतिप्रकरणम्

पिप्पलाः फलिता न वा ?	पीपल फले हैं वा नहीं ?
इमे वटाः सुच्छायास्सन्ति ।	ये वड़ अच्छी छायावाले हैं ।
पश्येम उदुम्बराः सफला वर्त्तन्ते ।	देख, ये गूलर फलयुक्त हो रहे हैं ।
इमे बिल्वाः स्थूलफलास्सन्ति ।	ये बेल बड़े बड़े फलवाले हैं ।
ममोद्यान आम्राः पुष्पिताः फलिताः सन्ति ।	मेरे बगीचे में आम फूले-फले हैं ।
इदानीं पक्वफला अपि वर्त्तन्ते ।	इस काल में पके फलवाले भी हैं ।
अस्याऽऽम्रस्य मधुराणि रसवन्ति च फलानि भवन्ति ।	इस आम के मीठे और रसीले फल होते हैं ।
तस्य त्वम्लानि भवन्ति ।	उसके तो खट्टे होते हैं ।
पनसस्य महान्ति फलानि भवन्ति	कटहल के बड़े बड़े फल होते हैं ।
शिंशपायाः काष्ठानि दृढानि सन्ति शालस्य दीर्घाणि च ।	सीसों की लकड़ी दृढ़ होती और सखुवे की लम्बी होती है ।
अस्य बर्बुरस्य कण्टकास्तीक्ष्णा भवन्ति ।	इस बबूल के कांटे तीखी अणीवाले होते हैं ।
बदरीणां तु मधुराम्लानि फलानि कण्टकाश्च कुटिला भवन्ति ।	बेरियों के तो मीठे खट्टे फल और इन के कांटे टेढ़े होते हैं ।
कटुको निम्बो ज्वरं निहन्ति ।	कड़ुआ नीम ज्वर का नाश कर देता है ।
मातुलुङ्गफलरसं सूपे निक्षिप्य भोक्तव्यम् ।	नींबू का रस दाल में डालकर खाने योग्य है ।
मम वाटिकायां दाडिमफलान्युत्तमानि जायन्ते ।	मेरे बगीचे में अनार बहुत अच्छे होते हैं ।
नवरङ्गीफलान्यानय ।	नारंगी के फलों को ला ।

वसन्ते पलाशाः पुष्यन्ति ।	वसन्त ऋतु में ढाक फूलते हैं ।
उष्ट्राः शमीवृक्षपत्रफलानि भुञ्जते ।	ऊंट शमी अर्थात् खीज्ड़ (छोंकर) वृक्ष के पत्ते और फलों को खाते हैं ।

औषधप्रकरणम्

कदलीफलानि पक्वानि न वा ?	केला के फल पके वा नहीं ?
तण्डुलादयस्तु वैश्यप्रकरणे लिखितास्तत्र द्रष्टव्याः ।	चावल आदि तो बनियों के प्रकरण में लिखे हैं वहां देख लेना ।
विषनिवारणायाऽपामार्गमानय ।	विष दूर करने के लिये चिचिड़ा ला ।
निर्गुण्ड्याः पत्राण्यानेयानि ।	निर्गुण्डी के पत्ते लाने चाहियें ।
लज्जावत्याः किं जायते ।	लज्जावन्ती का क्या होता है ?
गुडूची ज्वरं निवारयति ।	गिलोय ज्वर को शान्त करती है ।
शंखावलीं दुग्धे पाचयित्वा पिबेत् ।	शंखावली को दूध में पका के पिये ।
यथर्त्तुयोगं हरीतकी सेविता सर्वान् रोगान्निवारयति ।	जिस प्रकार से ऋतु ऋतु में हरड़े का सेवन करना योग्य है वैसे सेवी हुई हरड़ सब रोगों को छुड़ा देती है ।
शुण्ठीमरीचपिप्पलीभिः कफवात-रोगौ निहन्तव्यौ ।	सोंठ, मिर्च और पीपल से कफ और वात रोगों का नाश करना चाहिये ।
योऽश्वगन्धं दुग्धे पाचयित्वा पिबति स पुष्टो जायते ।	जो असगन्ध दूध में पका कर पीता है वह पुष्ट होता है ।
इमानि कन्दानि भोक्तुमर्हाणि वर्त्तन्ते ।	ये कन्द खाने के योग्य हैं ।
एतेषां तु शाकमपि श्रेष्ठं जायते ।	इन कन्दों का तो शाक भी अच्छा होता है ।
अस्यां वाटिकायां गुल्मगुच्छलताः प्रशंसनीयाः सन्ति ।	इस बगीचे में गुच्छा गुलाब और बेलें प्रशंसा के योग्य अर्थात् अच्छे हैं ।

आत्मीयप्रकरणम्

तव ज्येष्ठो बन्धुर्भगिनी च काऽस्ति ?	तेरे बड़ा भाई और बहिन कौन हैं ?
देवदत्तस्सुशीला च ।	देवदत्त और सुशीला ।
भो बन्धो ! अहं पाठाय व्रजामि ।	हे भाई ! मैं पढ़ने को जाता हूँ ।
गच्छ प्रिय ! पूर्णां विद्यां कृत्वाऽऽगन्तव्यम् ।	जा प्यारे ! पूरी विद्या करके आना ।
भवतः कन्या अद्यश्वः किं पठन्ति ?	आपकी बेटियाँ आजकल क्या पढ़ती हैं ?
वर्णोच्चारणशिक्षादिकं दर्शनशास्त्राणि चाधीत्येदानीं धर्मपाकशिल्पगणितविद्या अधीयते ।	वर्णोच्चारण शिक्षादि तथा न्याय आदि शास्त्र पढ़कर अब धर्म, पाक, शिल्प और गणितविद्या पढ़ती हैं ।
भवज्ज्येष्ठया भगिन्या किं किमधीतमिदानीञ्च तया किं क्रियते ?	आपकी बड़ी बहिन ने क्या-क्या पढ़ा है और अब वह क्या करती है ?
वर्णज्ञानमारभ्य वेदपर्यन्ताः सर्वा विद्या विदित्वेदानीं बालिकाः पाठयति ।	अक्षराभ्यास से लेके वेद तक सब पूरी विद्या पढ़ के अब कन्याओं को पढ़ाया करती है ।
तया विवाहः कृतो न वा ?	उसने विवाह किया वा नहीं ?
इदानीं तु न कृतः परन्तु वरं परीक्ष्य स्वयम्वरं कर्तुमिच्छति ।	अभी तो नहीं किया, परन्तु वर की परीक्षा करके स्वयंवर करने की इच्छा करती है ।
यदा कश्चित् स्वतुल्यः पुरुषो मिलिष्यति तदा विवाहं करिष्यति ।	जब कोई अपने सदृश पति मिलेगा तब विवाह करेगी ।
तव मित्रैरधीतं न वा ?	तेरे मित्रों ने पढ़ा है वा नहीं ?

सर्वं एव विद्वांसो वर्त्तन्ते यथाऽहं तथैव तेऽपि, समानस्वभावेषु मैत्र्यास्सम्भवात् ।	सब ही विद्वान् हैं, जैसा मैं हूँ वैसे वे भी हैं, क्योंकि तुल्य स्वभाववालों में मित्रता का सम्भव है ।
तव पितृव्यः किं करोति ?	तेरा चाचा क्या करता है ?
राज्यव्यवस्थाम् ।	राज्य का कारबार ।
इमे किं तव मातुलादयः ?	ये क्या तेरे मामा आदि हैं ?
बाढमयं मम मातुल इयं पितृष्वसेयं मातृष्वसेयं गुरुपत्न्ययं च गुरुः ।	ठीक; यह मेरा मामा, यह बाप की बहिन भूआ, यह माता की बहिन मौसी, यह गुरु की स्त्री और यह गुरु है ।
इदानीमेते कस्मै प्रयोजनायैकत्र मिलिताः ?	इस समय ये सब किसलिये मिलकर इकट्ठे हुए हैं ?
मया सत्कारायाऽऽहूताः सन्त आगताः ।	मुझसे सत्कार के अर्थ बुलाये हुए आये हैं ।
इमे मे मातामहीश्वसुरश्यालादयः सन्ति ।	ये मेरे नानी, ससुर और साले आदि हैं ।
इमे मम मित्रस्य स्त्रीभगिनीदुहितृजामातारः सन्ति ।	ये मेरे मित्र की स्त्री, बहिन, लड़की और जमाई हैं ।
इमौ मम पितुःश्यालदौहित्रौ स्तः ।	ये मेरे मामा और भानेज हैं ।

सामन्तप्रकरणम्

त्वद्गृहनिकटे के के निवसन्ति ?	तेरे घर के पास कौन कौन रहते हैं ?
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः ।	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
इमे राजसमीपनिवासिनः ।	ये राजा के समीप रहनेवाले हैं ।

कारुप्रकरणम्

भोस्तक्षंस्त्वया नौविमानरथशकटहलादीनि निर्माय तत्र	हे बढ़ई ! तुझको नावें, विमान, रथ, गाड़ी और हल आदि रचके उनमें

प्रशस्तानि कलाकीलशलाकादीनि संयोज्य दातव्यानि ।	अत्युत्तम कलायन्त्र, कील, कांटे आदि संयुक्त करके देने चाहियें ।
इदं काष्ठं छित्वा पर्य्यङ्कं रचय ।	इस लकड़ी को काट के पलंग बना ।
अस्मात्कपाटा सम्पादनीयाः ।	इससे किवाड़ों को बना ।
इमं वृक्षं किमर्थं छिनत्सि ?	इस वृक्ष को किसलिये काटता है ?
मुषलोलूखयोर्निर्माणाय ।	मूसल और ऊखरी बनाने के लिये ।

अयस्कारप्रकरणम्

भो अयस्कार ! त्वयाऽस्यायसो बाणासिशक्तितोमरमुद्गरशतघ्नि-भुशुण्ड्यो निर्मातव्याः ।	हे लोहकार ! तुझको इस लोहे के बाण, तलवार, बरछी, तोमर, मुद्गर, बंदूक और तोप बना देने चाहियें ।
एतस्य क्षुरादीनि ।	इसके छुरे आदि ।
इमौ कलशकटाहौ त्वया विक्रीयेते न वा ?	ये घड़ा और कड़ाही तुम बेचते हो वा नहीं ?
विक्रीणामि ।	बेचता हूँ ।
एतान् कीलकण्टकान् किमर्थं रचयसि ?	इन कील-कांटों को किसलिये बनाता है ?
विक्रयणाय ।	बेचने के लिये ।

सुवर्णकारप्रकरणम्

त्वया सुवर्णादिकं नैव चोर्यम् ।	तू सोना आदि मत चुराना ।
आभूषणान्युत्तमानि निर्मिमीष्व ।	गहने अच्छे सुन्दर बना ।
अस्य हारस्य कियन्मूल्यमस्ति ?	इस हार का कितना मोल है ?
पञ्च सहस्राणि राजत्यो मुद्राः ।	पांच हजार रुपये ।
इमौ कुण्डलौ त्वया श्रेष्ठौ रचितौ वलयौ तु न प्रशस्तौ ।	ये दोनों कुण्डल तूने अच्छे बनाये परन्तु कड़े तो बिगाड़ दिये ।

एतान्यङ्गुलीयकानि मुक्ताप्रवाल-हीरकनीलमणिजटितानि सम्पादय ।	ये अंगूठियाँ मोती, मूंगा, हीरा और नीलमणि से जड़ी हुई बना ।
एतेनालङ्कारा अत्युत्तमा रच्यन्ते ।	इससे गहने बहुत अच्छे बनाये जाते हैं ।
नासिकाभूषणं सद्यो निष्पादय ।	नथुनी शीघ्र बना दे ।
इदं मुकुटं केन रचितम् ?	यह मुकुट किसने बनाया ?
शिवप्रतापेन ।	शिवप्रताप ने ।
अस्य सुवर्णस्य कटककङ्कण-नूपुरान् निर्माय सद्यो देहि ।	इससे सोने के कड़ा, कांकणी वा कंगना और बिछिया बनाके शीघ्र दे ।

कुलालप्रकरणम्

भो कुलाल ! कुम्भशरावमृद्-गवकान्निर्मिमीष्व	अरे कुम्हार ! घड़ा, सकोरा और मट्टी की गौओं को बना ।
घटं देह्यनेन जलमानेष्यामि ।	घड़ा दे जल लाऊँगा ।

तन्तुवायप्रकरणम्

भो तन्तुवाय ! अस्य सूत्रस्य पटशाट्युष्णीषाणि वय ।	ओ कोरी ! इस सूत के पटका, साड़ी और पगड़ियाँ बुन ।

सूचीकारप्रकरणम्

भो ! सूच्या किं सीव्यसि ?	ओ ! सूई से क्या सीता है ?
शिरोऽङ्गरक्षणाधोवस्त्राणि सीव्यामि ।	टोपी, अंगरखा और पाजामा सीता हूँ ।

मिश्रितप्रकरणम् [२]

भो कारुक ! कटं वय ।	अरे चटाईवाले ! चटाई बुन ।
इमे व्याधा मृगादीन्पशून् घ्नन्ति ।	ये बहेलिये हरिन आदि पशुओं को मारते हैं ।

किराता वने निवसन्ति ।	किरात अर्थात् भील लोग वन में रहते हैं ।
सकमलानि सरांसि कुत्र सन्ति ?	कमलवाले तालाब कहां हैं ?
इमे तडागा ग्रीष्मे शुष्यन्ति ।	ये सब तालाब गरमी में सूख जाते हैं।
कूपाज्जलमानय ।	तू कूए से जल ला ।
अद्य वाप्यां स्नातव्यम् ।	आज बावड़ी में नहाना चाहिये ।
रञ्जकेन शतघ्निभुशुण्डयादयश्चलन्ति ।	बारूद से बंदूक और तोपें आदि चलती हैं ।
अयं कम्बलस्त्वया कस्माद् गृहीतः कस्मै प्रयोजनाय च ?	यह कम्बल तूने किससे लिया और किस प्रयोजन के लिये ?
कश्मीराच्छीतनिवारणाय ।	कश्मीर से, जाड़ा छुड़ाने के लिये ।
पश्य माणवकाः क्रीडन्ति ।	देख, लड़के खेलते हैं।
अस्मिन् गृहे स्रस्तराणि श्रेष्ठानि सन्ति ।	इस घर में बिछौने अच्छे हैं ।
इमे चोराः पलायन्ते ।	ये चोर लोग भागे जाते हैं ।
तत्र दस्युभिरागत्य सर्वं धनं हृतम् ।	वहां डाकू लोगों ने आकर सब धन हर लिया ।
द्वापरान्ते युधिष्ठिरादयो बभूवुः ।	द्वापर के अन्त में युधिष्ठिरादि हुए थे ।
मम पादे कण्टकः प्रविष्ट एनमुद्धर ।	मेरे पैर में कांटा घुस गया, इसको निकाल ।
केशान् संवय ?	बालों को संभाल ।
भो नापित ! नखाञ्छिन्धि मुण्डय शिरः श्मश्रूणि च ।	ओ नाऊ ! नखों को काट, शिर मूंड और मूछ भी मूंड ।
अयं शिल्पी प्रासादमत्युत्तमं रचयति ।	यह राज अटारी बहुत अच्छी बनाता है ।

अयं कोटपालो न्यायकारी वर्त्तते।	यह कोतवाल न्यायकारी है।
स तु धर्मात्मा नैवास्त्यन्याय-कारित्वात्।	वह कोतवाल तो धर्मात्मा नहीं है, अन्यायकारी होने से।
एते राजमन्त्रिणः कुत्र गच्छन्ति ?	ये राजा के मन्त्री लोग कहां जाते हैं ?
राजसभां न्यायकरणाय यान्ति।	राजसभा को न्याय करने के लिये।
भोस्ताम्बूलानि देहि।	ओ ! पान दे।
ददामि।	देता हूँ।
भोस्तैलकार ! तिलेभ्यस्तैलं निःसार्य्य देहि।	ओ तेली ! तिलों से तैल निकाल कर दे।
दास्यामि।	दूंगा।
अरे रजक ! वस्त्राणि प्रक्षाल्य सद्यो देयानि।	अरे धोबी ! कपड़ों को धोकर शीघ्र देना।
कपाटान् बधान।	किवाड़ों को बन्द कर।
इदानीं प्रातःकालो जातः कपाटा-वुद्घाटय।	इस समय सवेरा हुआ किवाड़े खोल।
सर्वे युद्धाय सज्जा भवन्तु।	सब सिपाही लोग लड़ाई के लिये तैयार हों।
अर्थिप्रत्यर्थिनौ राजगृहे युध्येते।	मुद्दई और मुद्दायले कचहरी में लड़ते हैं।
किमियं गोधूमान् पिनष्टि ?	क्या यह गेहुओं को पीसती है।
कुतोऽद्य दुर्गे शतघ्न्यश्चलन्ति ?	क्यों आज क़िले में तोपें चलती हैं ?
तेन भुशुण्ड्या सिंहो हतः।	उसने बन्दूक से बाघ को मारा।
तेनाऽसिना तस्य शिरश्छिन्नम्।	उसने तलवार से उसका शिर काट डाला।

अञ्जनं किमर्थमनक्षि ?	अञ्जन किसलिये आंजता है ?
उपानहौ धृत्वा क्व गच्छसि ?	जूते पहिन के कहां जाता है ?
जङ्गलम् ।	जङ्गल को ।
किं स्थाल्यामोदनं पचसि सूपं वा ?	क्या बटुवे में भात पकाता है, वा दाल ?
कटाहे शाकं पच ।	कड़ाही में तरकारी पचा ।
विरुद्धं वदिष्यसि चेत्तर्हि दन्तांस्त्रोटयिष्यामि ।	विरुद्ध बोलेगा तो तेरे दाँत तोड़ डालूंगा ।
तव पितुस्तु सामर्थ्यं नाभूत् तव तु का कथा ।	तेरे बाप का तो सामर्थ्य न हुआ, तेरी तो क्या ही बात कहनी है ।
येन प्रजा पाल्यते स कथन्न स्वर्गं गच्छेत् ?	जिसने प्रजा का पालन किया, वह स्वर्ग को क्यों न जाय ?
यो राज्यं पीडयेत्स कथन्न नरके पतेत् ?	जो राज्य को पीड़ा देवे, वह क्यों नरक में न पड़े ?
येनेश्वर उपास्यते तस्य विज्ञानं कुतो न वर्द्धेत ?	जो ईश्वर की उपासना करे, उसका विज्ञान क्यों न बढ़े ।
यः परोपकारी स सततं कथन्न सुखी भवेत् ?	जो परोपकारी है वह सर्वदा सुखी क्यों न होवे ?
अस्यां मञ्जूषायां किमस्ति ?	इस संदूक में क्या है ?
वस्त्रधने ।	कपड़ा और धन ।
इदानीमपि कुम्भ्यां धान्यं वर्त्तते न वा ?	अब भी कोठी में अन्न है वा नहीं ?
स्वल्पमस्ति ।	थोड़ा सा है ।
त्वमालसी तिष्ठसि कुतो नोद्योगं करोषि ?	तू आलसी रहता है, उद्योग क्यों नहीं करता ?
उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं निधेहि ।	दोनों ओर उजियाला होने के लिये दरवाजे पर दिया धर ।
तेनासिचर्म्मभ्यां शतेन सह युद्धं कृतम् ।	उसने ढाल और तलवार से सौ पुरुषों के साथ युद्ध किया ।

अतिथीन् सेवसे न वा ?	अतिथियों की सेवा करता है वा नहीं ?
प्रेक्षासमाजं मा गच्छ ।	कभी मेले-तमाशे में मत जा ।
द्यूतसमाह्वयौ कदापि नैव सेवनीयौ ।	जो अप्राणी को दाव पर धर के खेलना वह 'द्यूत' और प्राणी को दाव पर धर के खेलना वह 'समाह्वय' कहाता है, उनको कभी न सेवना चाहिये ।
यो मद्यपोऽस्ति तस्य बुद्धिः कथं न ह्रसेत् ?	जो मद्य पीनेवाला है, उसकी बुद्धि क्यों न न्यून होवे ?
यो व्यभिचरेत्स रुग्णः कथं न जायेत ?	जो व्यभिचार करे वह रोगी क्यों न होवे ?
यो जितेन्द्रियः स सर्वं कर्त्तुं कुतो न शक्नुयात् ?	जो जितेन्द्रिय है वह सब उत्तम काम क्यों न कर सके ?
योगाभ्यासः कृतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवेन्नरः ।	जिसने योग का अभ्यास किया है वह ज्ञान प्रकाश से युक्त होवे ।
वस्त्रपूतं जलं पेयं मनः पूतं समाचरेत् ।	वस्त्र से पवित्र किया जल पीना चाहिये और मन से शुद्ध जाना हुआ काम करना चाहिये ।
स भ्रान्तौ कदापि न पतेत् ?	वह भ्रमजाल में कभी नहीं गिरे ।
अयं वाचालोऽस्त्यतो बरबरायते ।	यह बहुत बोलनेवाला है इसी कारण बड़बड़ाता है ।
भूमितले किमस्ति ?	भूमि के नीचे क्या है ?
मनुष्यादयः ।	मनुष्य आदि ।
यः पद्भ्यां भ्रमति सोऽरोगो जायते ।	जो पग से चलता है वह रोगरहित होता है ।
व्यजनेन वायुं कुरु ।	पङ्खे से वायु (हवा) कर ।
किं घर्मादागतोऽसि यत् स्वेदो जातोऽस्ति ?	क्या घाम से आया है जो पसीना हो रहा है ?

स्वस्थे शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्तव्यम् ।	अच्छे शरीर होते रोज नहा के थोड़ासा खाना चाहिये ।
जलवायू शुद्धौ सेवनीयौ ।	पवित्र जल और वायु का सेवन करना चाहिये ।
सर्वर्तुके शुद्धे गृहे निवसनीयम् ।	जो सब ऋतुओं में सुख देनेवाला हो उसी घर में रहना चाहिये ।
नैव केनचिन्मलीनानि वस्त्राणि धार्याणि ।	किसी को भी मैले कपड़े पहिनने न चाहियें ।
तव का चिकीर्षास्ति ?	तेरी क्या करने की इच्छा है ?
गृहं गत्वा भोक्तुम् ।	घर जाके खाने की ।
त्वं सक्तुं भुङ्क्षे न वा ?	तू सत्तू खाता है वा नहीं ?
घृतदुग्धमिष्टैः सहाऽद्मि ।	घी, दूध और मीठे के साथ खाता हूँ ।
त्वयाम्रफलानि चूषितानि न वा ?	तूने आम चूसे वा नहीं ?
उर्वारुकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते ।	खरबूजे के फल यहां मीठे होते हैं ।
इक्षुभ्यो गुडादिकं निष्पद्यते ।	ऊख आदि से गुड़ आदि बनाये जाते हैं ।
इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया ।	इस समय गले तक मैंने दूध पिया ।
तक्रं देहि ।	मठा दे ।
अत्र श्वेता शर्करा वर्तते ।	यहां सफ़ेद चीनी है ।
अयं रुच्या दध्नौदनं भुङ्क्ते ।	यह प्रीति से दही के साथ भात खाता है ।
अद्य मोदका भुक्ता न वा ?	आज लड्डू खाये वा नहीं ?
त्वया कदाचित्कृशराऽपि भुक्ता न वा ?	तूने कभी खिचड़ी भी खाई वा नहीं ?
मयाऽपूपा भक्षिताः ।	मैंने मालपूवे खाये हैं ।
सशर्करं दुग्धं पेयम् ।	शक्कर के सहित दूध पीना चाहिये ।
येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते ।	जो धर्म्म का सेवन करता है वही सुखी रहता है ।

लेख्यलेखकप्रकरणम्

मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात् ।	मनुष्य लिखने का अभ्यास अच्छे प्रकार करे ।
अयमत्युत्तममक्षरविन्यासं करोति ।	यह अत्युत्तम अक्षर लिखता है ।
लेखनीं सम्पादय ।	कलम बनाओ ।
मसीपात्रमानय ।	दवात ला ।
पुस्तकं लिख ।	पोथी लिख ।
तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा ?	वहां चिट्ठी लिखकर भेजी वा नहीं ?
प्रेषितं पञ्च दिनानि व्यतीतानि तस्य प्रत्युत्तरमप्यागतम् ।	भेजी, पांच दिन बीते, उसका जवाब भी आ गया ।
सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा ?	सुनहरी अक्षर लिखने जानता है वा नहीं ?
जानामि तु परन्तु सामग्रीसञ्चयने लेखने च विलम्बो भवति ।	जानता तो हूँ परन्तु चीज इकट्ठी करने और लिखने में देर होती है ।
यद्यंगुष्ठतर्जनीभ्यां लेखनीं गृहीत्वा मध्यमोपरि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तो लेखो जायेत ।	जो अंगूठा तर्जनी अंगुली से कलम को पकड़कर बीचली अंगुली पर रख कर लिखे तो बहुत अच्छा लेख हो ।
अयमतीव शीघ्रं लिखति ।	यह अत्यन्त जल्दी लिखता है ।
एतस्य लेखनी मन्दा चलति ।	इसकी लेखनी धीरे चलती है ।
यदि त्वमेकाहं सततं लिखेस्तर्हि कियतः श्लोकांल्लिखितुं शक्नुयाः ?	यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो कितने श्लोक लिख सके ?
पञ्चशतानि ।	पांच सौ ।
यदि शिक्षां गृहीत्वा शनैः शनैर्लिखितुमभ्यस्येत्तर्ह्यक्षराणां सुन्दरं स्वरूपं स्पष्टता च जायेत ।	यदि शिक्षा ग्रहण कर के धीरे धीरे लिखने का अभ्यास करे तो अक्षरों का दिव्यस्वरूप और स्पष्टता होवे ।

अस्मिंल्लाक्षारसे कज्जलं सम्मेलितं न वा ?	इस लाख के रस में कज्जल मिलाया है वा नहीं ?
मेलितं तु न्यूनं खलु वर्त्तते ।	मिलाया तो है परन्तु थोड़ा है ।
मनुष्यैर्यादृशः पठनाभ्यासः क्रियेत तादृश एव लेखनाभ्यासोऽपि कर्त्तव्यः ।	मनुष्य लोग जैसा पढ़ने का अभ्यास करें वैसा हो लिखने का भी करना चाहिये ।
मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन रूप्येण कियतः श्लोकान् दास्यसि ?	मुझको वेद का पुस्तक लिखाना है, एक रुपये से कितने श्लोक देगा ?
अत्युत्तमानि ग्रहीष्यसि चेर्त्तहि शतत्रयं मध्यानि चेच्छतपञ्चकम् ।	जो बहुत अच्छे लोगे तो तीन सौ और मध्यम लोगे तो पांच सौ ।
साधारणानि चेत्सहस्रं श्लोकान् दास्यामि ?	यदि बहुत साधारण वा घटिया लोगे तो हज़ार श्लोक दूंगा ।
शतत्रयमेव ग्रहीष्यामि परन्त्वत्युत्तमं लिखित्वा दास्यसि चेत् ।	तीनसौ ही लूंगा परन्तु बहुत अच्छा लिख कर देगा तो ।
वरमेवं करिष्यामि ।	अच्छा, ऐसा ही करूंगा ।

मन्तव्यामन्तव्यप्रकरणम्

त्वं जगत्स्रष्टारं सच्चिदानन्दस्वरूपं परमेश्वरं मन्यसे न वा ?	तू इस संसार के बनानेवाले सत्, चित् और आनन्दस्वरूप परमेश्वर को मानता है वा नहीं ?
अयं नास्तिकत्वात् स्वभावात् सृष्ट्युत्पत्तिं मत्वेश्वरं न स्वीकरोति ।	यह मनुष्य नास्तिक होने से स्वभाव से सृष्टि की उत्पत्ति को मानकर ईश्वर को नहीं मानता ।
यद्ययं कर्तृकार्यरचकरचनाविशेषान् संसारे निश्चिनुयात्तर्ह्यवश्यं परमात्मानं मन्येत ।	जो यह नास्तिक कर्त्ता क्रिया बनानेहारा और बनावट को इस जगत् में निश्चय करे तो अवश्य ईश्वर को माने ।

योऽत्र सृष्टौ रचितरचनां पश्यति स जीवः कार्य्यवत्स्रष्टारं कुतो न मन्येत ?	जो इस सृष्टि में बने हुए पदार्थों की बनावट को प्रत्यक्ष देखता है वह जैसा कारीगरी को देख के कारीगर का निश्चय करते हैं वैसे जगत् के बनाने वाले परमात्मा को क्यों न माने ?
यत्रोत्तमा धार्मिका आस्तिका विद्वांसोऽध्यापका उपदेष्टारश्च स्युस्तत्र कोऽपि कदाचिन्नास्तिको भवितुं नैवार्हेत ।।	जहां श्रेष्ठ, धर्मात्मा, आस्तिक, विद्वान् लोग पढ़ानेवाले और उपदेशक हों वहाँ कोई भी मनुष्य नास्तिक कभी नहीं हो सकता ।
कैः कर्मभिर्मुक्तिर्भवति तदा क्व वसन्ति तत्र किं भुज्यते च ?	किन कर्मों से मुक्ति होती है, उस समय कहां वास करते और वहाँ क्या भोगते हैं ?
धर्म्यैः कर्मोपासनाविज्ञानैर्मुक्तिर्जायते,तदानीं ब्रह्मणि निवसन्ति परमानन्दं च सेवन्ते ।	धर्मयुक्त कर्म, उपासना और विज्ञान से मोक्ष होता है, उस समय ब्रह्म में युक्त जीव रहते और परम आनन्द का सेवन करते हैं ।
मोक्षं प्राप्य तत्र सदा वसन्त्वाहोस्वित् कदाचित्ततो निवृत्य पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्ति ?	जीव मुक्ति को प्राप्त होके वहाँ सदा रहते हैं अथवा कभी वहाँ से निवृत्त होकर पुनः जन्म और मरण को प्राप्त होते हैं ?
प्राप्तमोक्षा जीवास्तत्र सर्वदा न वसन्ति, किन्तु महाकल्पपर्यन्तमर्थाद् ब्राह्ममायुर्यावत्तावत्तत्रोषित्वाऽऽनन्दं भुक्त्वा पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्त्येव ।	मुक्ति को प्राप्त हुए जीव वहां सर्वदा नहीं रहते, किन्तु जितना ब्राह्मकल्प का परिमाण है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर आनन्द भोग के फिर जन्म, और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं ।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मितः संस्कृतवाक्यप्रबोधनामको निबन्धः समाप्तः ।।

परिशिष्ट

[संस्कृतवाक्यप्रबोध के सम्बन्ध में श्री पं० अम्बिकादत्त ने आक्षेप किया था, जिसका उत्तर किसी पण्डित ने दिया जो ऋषि दयानन्द के पत्र व विज्ञापन में निम्न प्रकार प्रकाशित है—]

१—येन शरीराच्छ्रमो न क्रियते स नैव शरीरसुखमवाप्नोति ।

पृ० ७ । पं० १ ॥

यहां पण्डित अम्बिकादत्तजी लिखते हैं कि (शरीरात्) इस पद में पञ्चमी विभक्ति अशुद्ध है किन्तु (शरीरेण) ऐसा चाहिये । सो यह सन्देह कारक-व्यवस्था को ठीक-ठीक नहीं विचारने से हुआ है । देखो श्रम कहते हैं पुरुषार्थ करने को । उसका कर्त्ता जीवात्मा और शरीर आश्रय रहता है । क्योंकि **चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्** । चेष्टा अर्थात् क्रिया का जो आश्रय है उसको शरीर कहते हैं । सो यहां **पञ्चमी विधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम्** । अ० २ । ३ । २८ ॥ इस वार्तिक से (आश्रित्य) इस ल्यबन्त क्रिया के लोप में पञ्चमी विभक्ति हुई है । देखो, ऐसा वाक्यार्थ होगा । **येन पुरुषेण शरीरमाश्रित्य श्रमो न क्रियते**—इत्यादि । जो कहो कि ऐसा अर्थ भाषा में क्यों न किया तो संस्कृत के एक वाक्य का व्याख्यान भाषा में कई प्रकार से कर सकते हैं इसमें कुछ विवाद नहीं है । परन्तु यहां तो प्रयोजन यही है कि भाषा सुगम और थोड़ी हो ऐसा उल्था करना चाहिये । अब पण्डितजी के कहने से तो **प्रासादात्प्रेक्षते** इत्यादि महाभाष्यकार के प्रयोगों में भी पञ्चमी विभक्ति नहीं होनी चाहिये । और भी पण्डितजी क्या लिखते हैं कि **विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्** । अ० २ । ३ । २५ ॥ भला इसका यहाँ क्या प्रसंग था ? सो जब स्वामीजी के मुख्य अभिप्राय को पण्डितजी न समझे तो जो सूत्र सामने आया लिख बैठे । भला शरीर शब्द को कोई थोड़ी विद्यावाला भी गुणवाचक कह सकता है कि जिससे गुणवाची मान के पञ्चमी विभक्ति हो जावे । और कारक विषय में ऐसा भी नियम है कि—**कारकं चेद्विजानीयाद्यां यां मन्येत सा भवेत्** ।

महाभाष्य १ । ४ । ५१ ।। अर्थात् यह शब्द क्रिया के किस अंश को सिद्ध करता है ऐसे क्रियासाधक कारक को जान के जिस जिस विभक्ति से वह अर्थ प्रतीत हो सके वह विभक्ति हो जाती है। इन गूढ़ बातों को समझना सबका काम नहीं है ।। १ ।।

२—चक्रवर्तिशब्दस्य कः पदार्थः ? पृ० ११ पं० ५ ।।

यहां पण्डितजी लिखते हैं कि चक्रवर्ति शब्द का क्या अर्थ है इसकी संस्कृत यही होगी। इनको भाषा का भी बोध है जैसा विदित हो गया, भला संस्कृत शब्द को स्त्रीलिंग पण्डितजी ने किस व्याकरण से किया। यह संस्कृत प्राचीन ऋषि-मुनियों के अनुकूल है, इसमें कुछ दोष नहीं। देखो, महाभाष्य में लिखा है कि **अथ शब्दसिद्धस्य कः पदार्थः ?** अ० १। पाद ११। आह्निक १ ।। इसका क्या यह अर्थ नहीं है कि सिद्ध शब्द का क्या अर्थ है ? बड़े आश्चर्य की बात है कि प्राचीन ग्रन्थों को बिना देखे दोष देने लगते हैं। अब पण्डितजी का लगाया दोष कुछ स्वामीजी को ही लगा हो सो नहीं किन्तु इन्होंने तो सब ऋषि-मुनियों को दोष लगा दिया औ **सापेक्षमसमर्थं भवतीति**। महाभाष्य २ । १ । १ ।। यह दोष यहां कभी नहीं आता क्योंकि यहां एक देश के साथ अन्वय नहीं है। और इसी प्रका **सभा शब्दस्य कः पदार्थः ?** इसको शुद्ध समझ लेना ।। २ ।।

३—अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यं नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि
(महा० २ । १ । १) पृ० १९ । २४ ।

यहां 'षण्मास' शब्द में पण्डित जी को सन्देह हुआ है कि यहाँ **द्विगोः** । अष्टा० ४ । १ । २१ ।। इस सूत्र से ङीप् होके षण्मासी शुद्ध होता है। इस भ्रम का मूल यही है कि उनको व्याकरण के सब सूत्र विदित नहीं हैं। पण्डितजी के कथनानुसार यदि स्वामीजी का लेख अशुद्ध भी माना जाय तो फिर पाणिनि मुनि का सूत्र भी अशुद्ध मानना चाहिये। सू० **षण्मासाण्ण्यच्च** । अ० ५।१।८३।। यहां पण्डितजी के मतानुसार **षण्मास्या ण्यच्च** इस प्रकार का सूत्र होना चाहिये। अब देखिये पाणिनीय सूत्र को यदि

पण्डितजी जानते होते तो स्वामीजी के लेख को मिथ्या दोष क्यों लगाते और छोटे छोटे बालक कि जो अष्टाध्यायी के सूत्र भी घोखते हैं वे भी जानते हैं कि यह सूत्र ऐसा है। इस प्रकार के बहुत से प्रयोग व्याकरण आदि शिष्ट जनों के ग्रन्थों में आते हैं तो क्या सब अशुद्ध हैं। अब रहा कि ङीप् क्यों नहीं होता तो पात्रादिभ्यः प्रतिषेधः। महा० २।४।१७॥ यह वार्तिक इसीलिये है। पात्रादि आकृतिगण है। इसका परिगणन कहीं नहीं किया कि इतने ही पात्रादि शब्द हैं। महाभाष्यकार ने तो इस वार्तिक पर उदाहरण मात्र दिया है। अब इसी प्रकार 'द्विवर्षानन्तरम्' इसको भी शुद्ध समझ लेना चाहिये। पाणिनिजी महाराज ने अपने सूत्र में 'षण्मास' शब्द को पढ़ा है। इससे यह भी उनका उपदेश प्रसिद्ध विदित होता है कि 'षण्मास' आदि शब्दों में ङीप् कदापि नहीं होता और कोई किया चाहे तो अशुद्ध ही है*॥ ३॥

---

* आर्यदर्पण मई १८८० पृ० १२० पर छपा। वह अङ्क अगस्त के अन्त या सितम्बर के आरम्भ में छपा होगा। देखा श्रावण शु० १३ सं० १९३७ (१८ अगस्त १८८०) का पत्र।